तेलंगाना कविता

(तेलुगू से हिंदी में अनूदित कविताओं का संकलन)

संपादक : डॉ. जी.वी. रत्नाकर । सुंकर रमेश

तेलंगाना रिसोर्स सेंटर
हैदराबाद

तेलंगाना कविता

(तेलुगू से हिंदी में अनूदित कविताओं का संकलन)

अनुवादक

डॉ. जी.वी. रत्नाकर

संपादक

डॉ. जी.वी. रत्नाकर

सुंकर रमेश

प्रकाशक

तेलंगाना रिसोर्स सेंटर

490, स्ट्रीट नं. 11, हिमायतनगर

हैदराबाद–500 029

Telangana Kavita
(Telugu to Hindi translated Collection of Poems)

Translated : Dr. G.V. Ratnakar

First Edition : December 2014

Copies : 500

© *Dr. G.V. Ratnakar*

Price : ***Rs. 100/-***

Cover Design : M. Vedakumar

Cover Photos : Raja Deendayal
(Collection of B. Narsing Rao, Film Maker)

Edited by :
Dr. G.V. Ratnakar
drgvratnakargalla@yahoo.com
(09849303175)
Sunkara Ramesh
rameshpoet9@gmail.com

Published by :
***M. Vedakumar**, Chairman*
Telangana Resource Centre, Hyderabad.

For Copies :
Telangana Resource Centre
"Chandram" 490, Street No. 11,
Himayatnagar, Hyderabad-500029.
email: trchyd@gmail.com
Mobile : 9030626288
website : www.trchyd.org

Disha Book House ● Sahachara Book Mark ● Navodaya Book House ● Prajashakthi ● Vishaalandhra

Typesetting : Azam Khan, Hyderabad - 500 012. Ph : 9346966392

Printed at :
DECCAN PRESS Azamabad, Hyderabad. Ph.+91-040-27678411
e-mail : deccan.press@yahoo.com

संपादक की ओर से...

तेलंगाना के पर्दे पर निज़ाम पुनः प्रत्यक्ष हुआ। निज़ाम की प्रशंसा करते हुए कुछ लोग चर्चा को आगे बढ़ाये और कुछ लोग निज़ाम को गाली देते हुए निज़ाम सरकार की कुव्यवस्था पर अक्षर युद्ध (क़लम युद्ध) कर रहे हैं। इन सबका बोझ निज़ाम ढो रहा है। आख़िर वाद–विवाद करने के लिए एक नायक, प्रतिनायक मिल गया है। फिर क्या असली शोषक सुख की साँसे ले रहा है।

ज़मींदारों के राज्य से आगे चलते हैं। तेलंगाना दक्षिण–समतल में एक भाग है। बंजर भूमि जो पत्थर से भरी हुइ हो उसी ज़मीन को काम में लाते हुए थक चुके आदिवासी लोगों का निवास स्थान है।

मुगल शासकों ने दक्कन पर अपना अधिकार जमाए रखने के लिए गवर्नरों को नियुक्त किया। मुगलों के राजकीय अस्थिरता को देखकर स्थानीय गवर्नरों ने स्वतंत्रता प्रकट की। यह सारा राजनैतिक व्यवस्था में सहज है। इससे संचार (गमन) चालू हुआ देश में दूर दृष्टि रखने वाले लोगों ने तेलंगाना में आना शुरू किया। इसी क्रम में मावांडी, कायस्थ, उत्तर प्रदेश के मुस्लिम, तमिलनाडु के ब्राह्मण भी आए। रेड्लु, वेलमाओं भी इसी प्रकार आये हुए यानी सभी ज़मींदार होने वाले कार्य पर आ पहुंचे।

देश मनुवादी व्यवस्था में जकड़ा होने के कारण, सांडि व्यवस्था में ये हलदारी जातियों ने शोषण करना आरंभ किया। कोई भी शासक इस व्यवस्था का विरोध नहीं कर सकता था। ज़मींदारों पर आधारित होने के कारण आने वाले समय में देशमुख–व्यवस्था और वतनदारी व्यवस्था का बीज तेलंगाना में अंकुरित हुआ। हलदारी जातियां सभी एक जाति के रूप में आर्विभूत हुई।

ज़मींदारों के कुकर्मों का यह भी एक सच्चा उदाहरण है। दाचारम भूस्वामी के गाँव में प्रवेश करने वाली नववधु को अपनी पहली रात अपने पति के साथ नहीं बल्कि ज़मींदार के साथ गुज़ारना पड़ता था। यह ज़मींदारों के अहंकारों का प्रतिरूप का पराकाष्ट है।

रेड्डी, कम्मा जाति वाले लोगों ने ब्राह्मणों के नीचे स्तर पर रहने वाले

शूद्र जातियों को कभी समानता की भावना नहीं स्वीकारा। निचली जातियों के आंदोलनों का तीव्र रूप से विरोध किया। जहाँ आंदोलन तीव्र रूप में था वहाँ स्वरक्षण के लिए आंदोलन में भाग लिया।

इसके उपरांत आंध्र महासभा का निर्माण हुआ उसमें मध्यस्थ वाले कम्युनिस्ट उसके ऊपर उपाय सुझाने वाले भूस्वामियों को समर्थन करने वाले वर्ग, विरोध करने वाले वर्गों ने आंदोलन आरंभ किया। देशमुख प्रजा शोषक है यह बात निज़ाम सरकार को मालूम ही था। यह विषय सूबेदार से लेकर होम सेक्रेटरी तक एक ही अभिप्राय में रहते थे। ''देशमुख अराजकता और किसान आंदोलन का मुख्य कारक है। देशमुख सरकार के ख़िलाफ वकीलों जैसे आवाज़ उठाते, पर लोगों से शोषक के रूप में व्यवहार करते।

उस समय के नायकों के अवकाशवाद को डॉ. जयसूर्या नायुडू कहते हैं कि ''वे उस ओर खरगोशों के साथ दौड़ते हैं, इधर शिकारी कुत्तों के साथ मिलकर शिकार करते हैं।

उधर, भूस्वामियों को कर बढ़ाने का दिलासा देते तो इधर किसानों को कर कम कराने का दिलासा देते हैं। एक तरफ दूसरों पर आधारित भूस्वामियों को संरक्षण करते हुए, दूसरी ओर शोषित किसानों के हित में कार्य करने में हाँ में हाँ मिलाते हैं। एक ओर भरोसेमंद, ज़िम्मेदार, जनतांत्रिक सरकार चाहते हैं तो दूसरी ओर अमीर लोगों पर कर–व्यापारियों को खाद्य पदार्थों पर वर्चस्व नहीं रहना है ऐसी माँग करते हैं। कारखानों की वृद्धि की अभिलाषा प्रकट करते हैं तो उसी समय परिश्रम के मालिकों के मुनाफों पर नियंत्रण या कर न होने की माँग करते हैं।

उधर, साम्राज्यवादी युद्धों का विरोध करते हैं, इधर, युद्ध सामग्री पहुँचाने के कांट्रैक्ट के लिए आगे बढ़ते हैं। किसानों की वृद्धि के लिए नारे लगाते हैं पर भू आक्रमण करने हेतु बनाए गये शासन, जो किसानों को आपत्ति पहुँचाता है उसके खिलाफ आवाज़ नहीं उठाते हैं।

सन् 1940 के प्रारंभ में तेलंगाना में राजकारी व्यवस्था को कासिम रज़्वी ने पाला है। उर्दू में मख़्दूम मोहिउद्दीन, तेलुगु में दाशरथी, कालोजी, यादगिरी तिरुनग गीरी, सुद्वाला हनुमंत आदि कवियों ने महान काव्य लिखा है। विकास से संबंधित चर्चा वर्तमान तेलंगाना

इतिहास में मुख्य विषय–तेलंगाना को आंध्रा राज्य में मिलाने के पूर्व अतिरिक्त बजट हुआ करता था और विकास क्रम में सबसे आगे हुआ था ऐसे सुप्रसिद्ध अर्थवेत्ता हनुमंत राव आंकड़ों के साथ विवरण देते हैं। कोत्तापल्ली जयशंकर इसी सच्चाई को बताते हैं और कुछ कवियों की रचनाएँ भी निज़ाम शासकों का समर्थन करते हुए विश्लेषण को हमें इस दृष्टिकोण से देखना चाहिए सरकार का समर्थन कर रहे ऐसे मान्यता को दूर करना ही उनका लक्ष्य है। सापेक्ष रूप से विकास की तुलना करना ही आर्थिक विश्लेषण होगा। कवि–रचनाकारों की बातों से कुछ हलचल हुई। पर दो वादों का आर्विभाव हुआ। नाज़ुक ख़यालों के कवियों, रचनाकारों का आग्रह कभी भी धर्मग्रह है। वे किसी का समर्थन नहीं करते केवल उन्हें समझने में किसी की विज्ञता होती है।

पोतना कड़पा के हैं कहने से तेलंगाना कवियों और रचनाकारों में बड़ा असंतोष व्याप्त हुआ। सांस्कृतिक विरासत को भी यहाँ से लूट के ले जाते हो क्या कहकर खेद प्रकट किया। अनेक साक्ष्यों के बीच इतिहास के गूढ़ अध्ययन के बाद पोतना तेलंगाना के ही हैं इस विषय का खुलासा हुआ।

हैदराबाद नगर में एक समय बहुत शांति होती थी। इसी क्षेत्र में पैदा हुए आशा राजू हैदराबाद में हो रही बदलाव अपने आँखों से देखते हुए कविता लिख रही हैं। भुजाओं पर कुछ लटक रहा है यही कहने में ही हमें कवि नगर जीवन की कठिनाइयों को बताता हुआ हम देख सकते हैं।

इस संकलन में कविताएँ तेलंगाना जीवन में विभिन्न दिशाओं का परिचय देता है। तेलंगाना भूमि पर हो रहे परिवर्तनों पर दृष्टि रखता है। यहाँ की सामाजिक हलचलों को काव्यों में उतारा है। नडि गुडेंऐसा क्यों हुआ? कहकर जूलरी गौरी शंकर प्रश्न कर रहा है। हमारा नडि गुडें हँस रही है ऐसा कहते हैं। जूकंटी की कविता शैली सुप्रसिद्ध है। तेलंगाना की जीव भाषा को नये रूप में स्वागत करता है और शैली की सृष्टि करता है। विलक्षण ध्वनि में होकर भयभीत करती है। दोड्डी राममूर्ति मुदिगोन्डा का खून हमारी आँसुओं की धारा बनकर वर्तमान विषयों को जोड़कर काव्य कर रहा है।

तेलंगाना काव्य रूप से, वस्तु के रूप में देखा जाए तो बहुमुखी रूप से विस्तार हो रही है। जीवन के पाश्वों को आर्ट फिल्म के रूप में दिखाते हैं, परंतु प्रादेशिकता को अपने काव्यों में लेकर आना एक शुभ परिणाम है। केवल बाहरी अंशों को ध्यान न देते हुए कार्यकरण लाभों को तात्विक दृष्टि से आविष्कार कर रहे हैं। स्त्रीवाद, दलितवाद में उत्पन्न हुई प्रश्नों को लेकर तेलंगाना कविगण अपनी ज़मीन पर खड़े होकर प्रश्न कर रहे हैं। विकास यानि रेड इंडियन्स की सजीव हत्या जैसे अपनी ज़मीन से भगाने की तरह नहीं विकास का राज बता रहे हैं। यह कविता धोखा खा रहे तेलंगाना लोगों की आशाओं–आकांक्षाओं का प्रतिरूप है।

इस संकलन में तेलंगाना आत्म वेदना से भरे काव्य हैं। जैसे ज़मीन है तो ही हमारा अस्तित्व होता, अस्तित्व हो तो ही ना हमारी भाषा को ऊपर उठा सकते हैं। साठ वर्ष के पर्व को देंचनाला श्रीनिवास ने आविष्कार किया था। न सूखी हुई खून के अवशेषों को ननुमासा स्वामी बता रहा है। विभाजन पत्रों को देने के लिए कासुला लिंगारेड्डी कह रहे हैं। कवियों ने रजाकारों की बात को प्रस्ताव किया। उस समय के रजाकारों और आज की घटनाओं से तुलना करते हुए आज तक अपनी वेश बदलकर फिर रहे हैं। सावधान रहने के लिए कह रहे हैं। इस संकलन में प्रत्येक कविता सुप्रसिद्ध है। विभिन्न नामों (शीर्षकों) से यह कविताएँ तेलंगाना आत्मा को आविष्कार कर रही हैं। तेलंगाना पर हो रहे अत्याचारों को लोग अब सहेंगे नहीं। साहस इनकी आदत है यह कवियों ने इस कविता संग्रह में प्रस्तुत किया है।

डॉ. जी.वी. रत्नाकर
सुंकर रमेश
संपादक

तेलंगाना मिट्टी की खुशबू...

मिट्टी की ख़ुशबू वही जानते हैं जो उस मिट्टी के गर्भ में पैदा होते हैं। उस मिट्टी में जन्म लेकर उसी मिट्टी में मिल जाने वालों को ही उस मिट्टी की सुगंध की अनुभूति होती है। उस ख़ुशबू को पाने के लिए वह हमेशा तरस खाता है। वर्षा की पहली बूँद ज़मीन पर पड़ते ही जो ख़ुशबू पृथ्वी से निकलती है उसे केवल उस ज़मीन पर जन्म लेने वाला ही अनुभव कर सकता है। लगभग पाँच दशक से पराधीन तेलंगाना में जी रहे लोग आज तक उसकी मिट्टी की ख़ुशबू से दूर हो गये हैं।

स्वतंत्रता आंदोलन और तेलंगाना राज्य की लड़ाई के बीच कई तरह का संबंध जुड़ा हुआ है। भले ही झंडे अलग होकर भी राज्य को ही एजेंडा के रूप में रखकर सब ने मिलकर काम किया है। ठीक उसी प्रकार तेलंगाना में भी हुआ है। उस समय साम्राज्यवादियों के खिलाफ लड़ाई हुई तो आज वही लड़ाई उपनिवेशियों के विरुद्ध हुई। कुछ पूंजीपतियों ने करोड़ो लोगों को लूटने के खिलाफ, प्राकृतिक संपदा को लूटने के खिलाफ, शिक्षा, नौकरी, सामाजिक, आर्थिक अंशें में दबाये रखने के खिलाफ इस आंदोलन को चलाया भाषा संस्कृति को बचाने के लिए अलग राज्य को लक्ष्य में रखकर यह आंदोलन चलाया। आरएसएस, आरएसयू जैसे अलग–अलग पक्ष होकर भी इन लोगों ने तेलंगाना आंदोलन को ही एजेंडा बनाकर मिलकर काम किया है।

उस समय स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए भारतीय जनता ने जिस आंदोलन को चलाया था ठीक उसी प्रकार आज तेलंगाना की जनता ने भी तेलंगाना राज्य की प्राप्ति के लिए आंदोलन किया है। पूर्ण स्वतंत्रता देने के पहले अर्ध स्वतंत्रता देकर भारतीयों को जिस प्रकार भागी बनाया आज उसी प्रकार केंद्र सरकार ने तेलंगाना के लोगों को आधी स्वतंत्रता देने की घोषणा तो किया है लेकिन उसमें पाबंदी लगाई गयी। उस पाबंदियों से तेलंगाना के प्रजा की आकांक्षाओं की बलि हुई है।

सामाजिक, प्रजासत्तात्मक तेलंगाना को तो क्या भौगोलिक तेलंगाना को भी दे नहीं सके। पोलवरम में जिसने ज़मीन खोई थी उन्हें वहाँ से निकाला गया। इतना ही नहीं हैदराबाद को दो राज्यों की राजधानी

घोषित किया गया। यह पूर्ण तेलंगाना नहीं समझकर फिर से एक बार आंदोलन करने में यहाँ के लोग जुट गए। उस आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए सभी संस्थाओं के लोगों ने भाग लिया।

तेलंगाना पाने की आकांक्षा छः दशकों का सपना था उस सपने को साकार करने में सौ से अधिक लोग मारे गए। लगभग 1200 लोगों ने आत्मबलिदान कर ली। कई हजारों लोग पुलिस की मार से घायल हुए थे। लाखों लोगों पर गलत आरोप लगाकर केस दर्ज किया गया है। विद्यार्थियों ने पढ़ाई को छोड़कर आंदोलन में भाग लिया है। नौकरशाहियों ने सरकार के आदेशों के खिलाफ आंदोलन में भाग लिया। सारी जनता के द्वारा हड़ताल किया गया है। इस आंदोलन को केवल राजनेताओं ने ही नहीं छेड़ा बल्कि सारी संस्थाओं ने आंदोलन को आगे बढ़ाया। छोटे बच्चों से लेकर बूढ़ों तक इस लड़ाई में भाग लिये।

इस आंदोलन में जनता शामिल होने के लिए अनेक कवि, गायक, चित्रकार जैसे अनेक लोगों का अमूल्य योगदान रहा। एक–एक अक्षर पुलिस की गोलियों की तरह लाखों लोगों को चेतना देने में सफल रही। उन कवियों के कलम में स्याही के जगह पर खून है, वही खून लाखों क्रांतिकारों की सृष्टि की। एक–एक कवि की रचना का एक–एक अक्षर लाखों लोगों को विचार करने को मजबूर किया।

किसी भी आंदोलन के लिए सिद्धांत की प्रधानता होती है। उस सिद्धांत का प्रचार करने में कवियों की प्रधान भूमिका रही। उन्होंने दुःख, आक्रोश, क्रोध और हाहाकार से भरी कविता लिखकर तेलंगाना के लोगों में आग की ज्वाला भड़काई। ऐसी ज्वाला तेलंगाना के चारों ओर फैल गई। मन को निचोड़ कर देने वाली, दिमाग को सोचने के लिए मजबूर करने वाली और आंदोलन को आगे बढ़ाने वाली कविताएँ लिखी गयी है। ऐसी ही कविताओं से संकलित 'सेंट ऑफ साइल' एक पुस्तक के रूप में आई है। इसमें 83 कविताएँ युनी गयी हैं। ये कविताएँ आंदोलन के भिन्न–भिन्न दशाओं की प्रजा की आकांक्षाओं को स्पष्ट करती है।

आज देश में कई प्रांतों में छोटे राज्यों के लिए आंदोलन चल रहे हैं। इन आंदोलनों को जो चला रहे हैं उन सभी तेलंगाना संघर्ष के संदर्भ में अपना समर्थन दिया। गूरखालैंड, विदर्भ– ऐसे कई भगों में कई वर्षों

से अलग राज्य प्राप्त करने के लिए आंदोलन चला रहे हैं। इन आंदोलनों के स्फूर्ति दायक में तेलंगाना आंदोलन स्मरणीय है।

तेलंगाना आंदोलन पर कई बाहर के शासकों ने और पूंजीपतियों ने अवास्तविक बातों को लोगों में फैलाया है। वे सब एक ही भाषा, एक ही इतिहास, एक ही उत्तराधिकारी और एक ही संस्कृति को मानते हैं। इस तरह की अवास्तविक बातों को तेलंगाना के कवियों ने विरोध किया, आप अलग.... और हम अलग की बातें की है। आपस के भेद–भाव को उपनिवेशकों को समझाया। तेलंगाना के कवियों ने उपनिवेशकों से अलग होने की आवश्यकता को समझाया। उन लोगों के विचारों और संवेदना को देश के सभी प्रांतों में प्रचार करने के लिए, दूसरे प्रांतों में हो रहे अलग राज्य की मांग के आंदोलन में स्फूर्ति दायक होने के लिए सेंट ऑफ साईल उबरा है।

साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के बीच कई नजदीक का संबंध है। इन दोनों में शिक्षा, धर्म, संस्कृति, भाषा जैसे विषयों पर लड़ाई हो रही है। उस समय साम्राज्यवाद को फैलाने के लिए कई युद्ध घटित हुए। एक वर्ग को सर्वनाश करने के लिए उस वर्ग के सभी लोगों को खत्म कर देना हिट्लर की चाल थी। आज उपनिवेशवाद को विस्तार करने के लिए अन्यों की संस्कृति का नष्ट–भ्रष्ट कर रहे हैं। तेलंगाना के विषय में भी यही हुआ है। ग्राम देवताओं को वैदिक देवताओं के रूप में बदल दिया है।

आंध्रा के लोगों ने तेलंगाना भाषा को आंध्रा के भाषा में मिला दिया है। तेलंगाना भाषा को अपमानित किया है। तेलंगाना भाषा के सभी शब्दों को विकृति में बदल कर उनकी प्रकृति को समाप्त कर दिया। प्राकृतिक संपत्ति को लूट लिया। जमिनों को हड़प लिया। नदी के प्रवाह को अपनी ओर मोड़ लिया। जंगलों को नष्ट कर दिया। तेलंगाना के लोगों को सभ्यता नहीं है कहकर उपनिवेशकों ने अपनी भाषा और संस्कृति को उन पर जबर्दस्ती से थोप दिया है।

ऐसे मुद्दों को लेकर उसके खिलाफ अपने अस्त्र उठाये। उन्होंने समाज के विविध वर्गों में एकता बांध दिया। तेलंगाना के सभी लोगों को अपने अक्षरों से एक स्वर में लाया। यहाँ के इतिहास को फिर से लिखा।

उन्होंने यहाँ की श्रेष्टता की स्तुति की। यहाँ के संघर्ष का उल्लेख किया। उन्होंने यहाँ के वीर गाथाओं का गायन किया। यहाँ की मिट्टी की खुशबू को अपने अक्षरों के माध्यम से बिखराया है। अक्षरों को खुषबू रहती है क्या....? उसमें मिट्टी की खुशबू होती है क्या....? अगर आपको संदेह हो तो उसका जवाब इस मिट्टी की **खुशबू पुस्तक** को पढ़ने पर गर्मी के दिनों में भी उस खुशबू की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। भूमि पुत्रों के मन में परकाया प्रवेश कर सकेंगे। उन लोगों के आकांक्षाओं को समझ सकेंगे। तेलंगाना आंदोलन क्यों शुरू हुआ, कैसे चला, कैसे उस आंदोलन को दबाया गया, पुनः आंदोलन कैसे शुरू हुआ आदि अंशों को समझ सकते हैं।

इस संकलन में 26 कविताएँ सम्मिलित हैं। प्रत्येक कविता अपनी विशिष्टता को दर्ज करती है। तेलंगाना लोगों के हृदय की आवेदना, प्रत्येक कविता के द्वारा उनकी दुःख भरी व्यथा को प्रस्फुटित करती है। एक कविता यहाँ की संस्कृति को वर्णन करती तो दूसरी कविता यहाँ पर हुए ऐतिहासिक घटनाओं को समझाती है। उन्होंने तेलंगाना के पूर्व वैभव को बताया है। वर्तमान में छाये अँधेरे को समझाया है, उपनिवेशक, पूंजीपतियों पर प्रश्न उठाया। अन्यायों के खिलाफ कदम बढ़ाया।

इन कवियों ने अपने अक्षरों से बतुकम्मा के खेल को वे अपने रचनाओं से दर्शाया। वे अपने शब्दों के द्वारा सम्मक्का, सारक्का के वीर गाथाओं को बताया। तेलुगु का पहला शिलालेख करीमनगर में आविष्कार किया। उपनिवेशक के साथ जोड़ा जाए तो उनकी सांस्कृतिक वैविध्य को, अनेकता को उजागर किया है। इन कविताओं के अपने विशेष दर्गों, मंदिरों को याद कर रहे हैं। तेलंगाना के गाँवों को शताब्दियों से भाग्यनगर के साथ संबंध को याद किया है। इन कवियों ने शहरीकरण और औद्योगीकरण को ऐसा प्रश्न किया है और उन्होंने उनसे प्रश्न किया है जिसने तेलंगाना को नुकसान पहुंचाया है। इन कवियों ने छोटे बच्चों से लेकर युवकों के आत्म बलिदानों को याद किया है। उनकी आकांक्षाओं को अपना मैत्री जताया है। उन्होंने उनकी मृत्यु का कारक कौन है पूछकर प्रश्न उठाया और ऐसे आत्मबलिदान नहीं करने की चेतावनी लोगों को दी है।

एन. गोपी, निखिलेश्वर, आशा राजू, सुंकर रमेश आदि लोगों की कविताएँ इसमें सम्मिलित किए गये है। ये सब कई समय से तेलंगाना आंदोलन में अपने कलम को शस्त्र बनाकर जुड़े हैं।

साहित्य की विधाओं ने आंदोलन का रूप धारण किया है। अपने स्वानुभव से देख सकते हैं कि इस तेज रोशनी ने जन–जन को कैसे प्रकाशमान किया। सभी लोग जानते हैं कि 'तेलंगाना कविता' धारावाहिक के रूप में सभी का मन जीत लिया है। 'तेलंगाना कविता' की कुछ प्रमुख कविताओं को चुकर अब हम राष्ट्रभाषा हिंदी में ला रहे हैं यह हमारे लिए बहुत ही आनंददायक बात है।

तेलंगाना में हिंदी भाषा को सभी लोग जानते हैं। हम जानते हैं कि उर्दू तथा हिंदी हैदराबाद में गंगा–जमुना नदी की भाँति मिलकर बह रही है और इस भव्य ऐतिहासिक संस्कृति को यह पुस्तक कविता कुसुमांजलि के रूप से अर्पित कर रही है।

तेलंगाना की इस कविता में आंदोलनों की विरासत दिखाई देती है। अन्याय के खिलाफ कलम चलाकर अमरवीरों के आशय को प्रेरणा के रूप में लेकर इस संकलन को संपादक मंडल डॉ. जी.वी. रत्नाकर और सुंकर रमेश ने हमारे सामने लाया है।

शुरू किया गया हुआ तेलंगाना आंदोलन अनेक विशेताओं से भरा हुआ है। उसके साथ ही अनोखे साहित्य का निर्माण भी हुआ है तथा इसमें विश्व के आंदोलनों को भी देख सकते हैं। ऐसी घनिष्ठ रुचि न होती तो उसे एक तात्विक बुनियाद पर ठहरा नहीं सकते।

सभी साहित्यिक विधाओं में कविता की अपेक्षा अन्य विधाओं को उतनी विशिष्टता को उजागर कर रही है। आंदोलन के समय में यह प्रसिद्ध कविता पहली बार अंग्रेज़ी में 'सेंट आप दि सॉईल' नाम से प्रकाशित होकर सारे विश्व को आकृष्ट किया है।

अनुवादक डॉ. जी.वी. रत्नाकर ने इसे हिंदी भाषा में लाने की आवश्यकता को महसूस कर देश के प्रत्येक राज्य में चल रहे आंदोलनों को लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया है। सच कहूँ तो साहित्य की कोई सीमाएँ नहीं होती। यह प्रवाह की तरह हमेशा चलता रहता है। उसकी शक्ति अनंत है।

तेलंगाना पुस्तक संस्था सुंकर रमेश और के. दामोदर के संपादन में अंग्रेज़ी में प्रचुरित किया गया है। इसे डॉ. जी.वी. रत्नाकर और सुंदर रमेश के संपादन में हिंदी में अनुवाद किया है। इसके मुद्रण का भार टी. आर.सी ने अपने कंधों पर लिया है। कई त्याग और अनेक आत्मबलिदान, प्राणों की आहुति देने वाले अनेक युवक–युवतियों के अमूलय प्राणों का ऋण चुका सकते हैं क्या? और कितने दिन...? कितने आँसू....? कितना भोलापन....? और कब तक लड़ाई....? पूरे विश्व इतिहास में स्वशासन के लिए इस आंदोलन को किस प्रकार चलाया है, इससे बढ़कर और कोई दर्दनाक किस्सा हो नहीं सकता।

इन कविताओं को हिंदी में अनुवाद करने वाले डॉ. जी.वी. रत्नाकर असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी को सादर प्रणाम। तेलंगाना आंदोलन का अभिवादन। विशेषताओं से भरा तेलंगाना आंदोलन पर कविता संकलन पहली बार तेलुगु में प्रकाशित हुआ है। उसके बाद कुछ चुनी हुई कविताएँ अंग्रेजी में अनुवाद होकर प्रकाश में आयी है। इस कविता संकलन को हिंदी भाषा में अनुवाद कर प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है। सारे भारत के लोगों के बीच में इस संकलन को लाना अपना कर्त्तव्य मानकर टी.आर. सी ने प्रोत्साहन दिया। तेलंगाना की विशेषता को विश्वविख्यात करने के लिए हमें मौका मिला है। तेलंगाना के लिए आत्मबलिदान किए गये उन अमर वीरों को हम यह पुस्तक समर्पित कर रहे हैं।

–वेद कुमार एम.

अध्यक्ष, तेलंगाना रिसोर्स सेंटर

हैदराबाद

आशंसा...

तेलुगु साहित्य में जाति, धर्म, जेंडर के साथ–साथ क्षेत्र की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आंध्र प्रदेश में मुख्यतः चार क्षेत्र व प्रांत हैं– तेलंगाना, रायलसीमा, तटीयांध्र और उत्तरान्ध्र। वैसे देखा जाए तो तटीयान्ध्र को छोड़कर शेष तीन क्षेत्र पिछड़े हुए क्षेत्र हैं। ये क्षेत्र उपेक्षा एवं तीव्र भेदभाव के शिकार हुए हैं। अनेक तथ्यों से यह स्थपित होता है कि इन तीनों क्षेत्रों में से तेलंगाना क्षेत्र और भी पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। अतः आज इसलिए पृथक तेलंगाना की माँग अपनी गति पर है और तेलंगाना की जनता ने एकजुट होकर एक ऐसा जन आंदोलन खड़ा किया है कि पृथक तेलंगाना राज्य गठित करने के सिवाय शासकों के सम्मुख अब कोई विकल्प नहीं है।

यह अत्यंत स्वाभाविक बात है कि जो क्षेत्र आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से पराधीन होते हैं वे स्वायत्ता की माँग करते हैं और चाहते हैं कि अपने क्षेत्र पर अपना ही अधिकार हो। इसी संकल्प के साथ मसस्त तेलंगाना की जनता पृथक तेलंगाना राज्य हासिल करने के लिए संघर्षरत है। वैसे पृथक तेलंगाना की माँग कोई नई माँग नहीं है। 1969 में ही पृथक तेलंगाना राज्य की माँग को लेकर बहुत बड़ा आंदोलन चलाया गया था। लेकिन कुछ स्वार्थी एवं सत्ता के पिछलग्गू नेताओं के कारण इस आंदोलन का गला घोंटने की कोशिश की गयी है। करीब 300 से भी ज्यादा विद्यार्थियों एवं युवकों ने अपने प्राणों को न्यौछावर किया है। सचमुच भारत के इतिहास में ही यह एक ऐतिहासिक संघर्ष था। वास्तव में यह कहना उचित होगा कि तेलंगाना जन संघर्षों की जन्मभूमि है। पूरे भारत के वामपंथी आंदोलन के इतिहास में ऐतिहासिक संघर्ष के नाम से जाने जाना वाला तेलंगाना के किसानों का सशस्त्र संघर्ष इसी धरती पर घटित हुआ है। जिसने वामपंथी आंदोलन के लिए अनेक अनुभव दिये हैं जो आज भी चर्चा के केंद्र में हैं।

1990 के बाद पृथक तेलंगाना की माँग को लेकर फिर से आंदोलन शुरू हुआ। इस प्रांत के साहित्यकारों एवं लेखकों ने पूरी चेतना और ताकत के साथ अपनी रचनाओं के माध्यम से इस आंदोलन का दिल से

स्वागत एवं समर्थन किया। रेखांकित करने के योग्य की बात यह कि अन्य विधाओं की तुलना में कविता में इस संघर्ष का स्वर अधिक मुखरित हुआ है। आजादी के कुछ वर्षों के बाद भाषा के आधार पर तेलंगाना प्रांत को जोड़कर आंध्र प्रदेश राज्य का गठन किया गया था। जबकि तेलंगाना की संस्कृति और जीवनशैली आंध्र की संस्कृति और जीवनशैली से नितांत भिन्न ही नहीं कुछ अर्थों में विशिष्ट भी है। इसके साथ ही पृथक आन्ध्र प्रदेश गठित किये जाने के बाद आन्ध्र के शासकों द्वारा तेलंगाना के प्रति उदासीन और उपेक्षा की नीतियाँ अपनायी गयी। विशेषकर पिछले कुछ दशकों में आन्ध्र से आकर तेलंगाना में बसने वालों की संख्या दुगनी व तिगुनी हो गयी। तेलंगाना आये आन्ध्र के उच्च वर्ग के लोगों ने तेलंगाना में हजारों एकड़ भूमि सस्ते दाम पर खरीदी। उद्योग एवं विद्यालय खोले रियल एस्टेट व्यापार को हवा दी। इसके साथ कृषि के क्षेत्र में भी व्यापारिक दृष्टि फैल गयी। तेलंगाना की भाषा और संस्कृति की अवहेलना की गयी। उदारवादी नीतियाँ और भूमंडलीकरण ने तेलंगाना की जनता की रीढ़ तोड़ डाली। कृषि ध्वस्त हो गयी। रोजगार के अवसर कम होने लगे। बेरोजगारी की सेना बढ़ने लगी। तेलंगाना प्रांत में खतरे की घंटियाँ बजने लगी। जनता में असुरक्षा की भावना बढ़ने लगी। कहने का तात्पर्य यह कि तेलंगाना का जन जीवन अस्त–व्यस्त हो गया। तेलंगाना का कवि विशेषकर युवा कवि इन परिस्थितियों से रू–ब–रू हुए बिना नहीं रह सकता। अतः उसके लिए हय कहना स्वाभाविक था–

अब
मुझे अपनी धरती चाहिए
मुझे अपनी हवा चाहिए
मुझे अपना पानी चाहिए

कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से जनता में स्वाभिमान की भावना जगाते हैं। स्वाभिमान के साथ जीना किसी भी प्रांत की जनता का अधिकार है। कवि स्वीकार करता है कि हमारी धरती और आकाश एक है–

ठीक है! मानते हैं
हमारी धरती एक है
राश्ट्र हमारा एक है
फिर, जिंदगियाँ हमारी एक क्यों नहीं हैं?

उपेक्षित तेलंगाना के कई पक्ष कविता में वर्तमान हैं। वास्ताव में तेलंगाना के गाँव विच्छिन्नता एवं विध्वंस के कगार पर है। निम्न पंक्तियों में तेलंगाना के गाँवों का सजीव चित्र उपस्थित किया गया है–

पलकों से प्रवाहित समुद्र
तेलंगाना का गाँव है,
आँसुओं का सरोवर है।
एक तरफ उबलता खून का संगीत,
तो दूसरी तरफ बुल्लेट की बारिष।
लटकती फाँसी के फन्दे की आवाज
क्षीणकाय के जीवन में आत्महत्याओं के तैरते दृष्य

मित्र जी. वी. रत्नाकर स्वयं एक कवि हैं। तेलुगु की दलित कविता के सार्थक हस्ताक्षर है। जी.वी. रत्नाकर ने तेलंगाना प्रांत के न होते हुए भी तेलंगाना के आंदोलन पर केंद्रित कविताओं का हिंदी में रूपांतरण करने का ऐतिहासिक जोखिम उठाया है। इस जोखिम भरे प्रयास का हृदय से स्वागत होगा, इस विश्वास के साथ.....।

–प्रो. वी. कृष्णा
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय

अनुक्रम

	विषय	पृ.सं.
01.	फूलों का नाव	..17
02.	शस्त्र	..19
03.	अब तक न आने वाले शव	..21
04.	समंदर	..25
05.	तेलंगाना नाद एक जीवनाद है	..27
06.	देखते हो क्या? देखिए...	..30
07.	भावुकता	..38
08.	मेदक चर्च	..41
09.	भोताल	..44
10.	बाढ़	..46
11.	एक पागल शायर	..49
12.	बांध	..54
13.	काश्मीर सा तेलंगाना	..59
14.	अस्तित्व का अंतिम संस्कार	..62
15.	एक अपूर्ण वाक्य की बात	..64
16.	जीवन रेखा	..67
17.	कष्ट	..70
18.	जलेबी	..71
19.	और एक बार तंगेडु फूल	..73
20.	कुमकुम डिबिया	..75
21.	आपके गुज़रने से	..78
22.	तेलंघाव	..80
23.	ज़ोर-शोर से रो	..81
24.	गीत	..83
25.	पत्थर ढोते-ढोते	..85
26.	प्रजातंत्र का सूत्र	..86

फूलों का नाव

रंग-बिरंगे फूल चुनकर
मूर्ति-सा आकार दिया, सुनहरे बतकम्मा का
कुमड़ा फूलों से
गुम्बद का आकार दिया
फूलों के पहाड़ पर
सुनहरा शिखर
रंग कुछ भी हो
सुगंध चाहे जो हो
मुलायम सीढ़ियों पर
मानो बने हो नए रिश्ते
दूर, अनजाने रिश्ते
जुड़ गए हो मानो फूल से
फूल अंगुलियों को,
चूमते हुए
सजाते हैं, बतकम्मा को
नवयुवा-

सुनहरा रंग मानो कन्याओं के
अंग से प्रतियोगिता कर रहा हो
पतले होठों समान
फूल हैं कागज़ के
मानो
मोती-सी हँसी
आँखों की काजल रेखाएँ
फूल के है समान
फूल तुरई के लग रहे हैं ऐसे
मानो, पूर्ण चाँदनी.....
फूल खिल रहा है ऐसे
जैसे वक्ष स्थल हो कन्या का
वैसे कन्याओं के बालों में
लगे फूल है
जल के शरीर पर मानो
खिले हो फूल
बतकम्मा की शोभा
प्रतिबिंबित होती आकाश में
दिखाई दे रही है
लग रहा है जैसे
फूलों की नाव धीरे-धीरे
जल के विहार कर रही हो।

-सुंकरा रमेश

शस्त्र

यहाँ.......
शव का....
निर्जीव के बीच
जीवन.....
एक खोखली आशा ही तो है

सीमा पार करने का निर्णय न कर
अँधकार और जल से मिश्रित प्रदेश है यह
सूखे अधरों पर
मृत्यु का लेप लगाए
भूख-प्यास से तड़पती आवाज़
भाप बन गई दुर्गंध, जिसे
छिपाया नहीं जाता
देह-श्वास है यह!
थोड़ पानी के लिए.....
सपने में कुएँ की बाल्टी की आवाज़

धीरे-धीरे मंद हो रही है!
वास्तव में पानी का महत्व अब धीरे-धीरे
समझ में आ रहा है.....
पानी का प्रवाह होना चाहिए।

खेत में पानी रहा तो
कानों को ख़ुशी मिलती है.....
पानी का प्रवाह बिल्कुल धीमा!
मैं किसी से बात करूँ तो भी
अर्थ आपको समझ में आ ही जाता है!
सैनिक का चढ़ाया हुआ धनुष बाण
शत्रु को ही लगता है इसमें कोई संदेह नहीं!

झुके हुए हाथ - पैरों से,
अति जीर्ण शरीर वाले हम फिर भी नहीं रो रहे हैं?
विकलांग-सा मानो
बाण का निर्माण कर रहा है
"Toxic Bone Arrow"
शस्त्र नया है.....
अब बोलने की ज़रूरत नहीं है.....
खाने से पहले स्वाद मत पूछो।

-कन्दुकूरि दुर्गाप्रसाद

अब तक न आने वाले शव

भाई हुआ तो क्या हुआ?
पिता हुआ तो क्या हुआ?
कहीं दूर जाकर जान गँवा दी
मरने के बाद
शव का इंतज़ार करते हुए
कितनी की व्यथा
कितना दुःख?

सरकारी योजनाओं का पुण्य हो
या प्रकृति का साथ
गोदावरी और गंगा नदियाँ भी
कल–कल बहती हुई हों....
पर इस गाँव की हरियाली का कारण
वे नहीं.....
चेहरे पर मूँछ की हरियाली का कारण
वे नहीं.....

चेहरे पर मूँछ न उगने की उम्र से ही
सारी पुरुष–जाति कुली का काम करने
अरब जाती हैं
इनकी उम्र–इनका जीवन
सारी शारीरिक, मानसिक शक्तियाँ
वहाँ पसीना, ख़ून, मृत्यु बनकर
यहाँ उनके गाँव को रोज़ी–रोटी दे रहे हैं
अपने परिवार का भरण–पोषण कर रहे हैं

मातृ–देश में ही जीवन–यापन के
हाई–टेक के नाम से सारे रास्ते बंद हो चुके हो तो,
विश्व व्यापारीकरण में खोखला देश
सारी आशाएँ अदृश्य होती दिखाई देती हैं।
जंगलों में, अरबी रेगिस्तान में
गरीब जनता, ऊँचे भविष्य की कामना से
जा रहे हैं
दिन.....
महीने......
वर्ष.....

जाने वाले कब लौटकर आएँगे– नहीं पता
परिवारजनों को देखने आये तब....
अपनी बाधाएँ, सारे कष्ट अपमान
को मन में छुपाकर
थोड़े से पैसे, वस्तुएँ और संतोष
अपने परिवार के लिए संभालकर

गठरी बाँध लाते हैं।
या फिर
वहाँ से लावारिस शव के समान
स्वयं गठरी में बँध आते हैं

यहाँ स्त्रियाँ, बुज़ुर्ग, बच्चे
निःसहाय इंतज़ार करते हैं
फूट-फूट कर राते हैं
वर्षों से,
पिता को जिसने नहीं देखा, ऐसे बच्चे,
प्रेम-सा व्यवहार करने वाले, गुरुओं में,
स्वयं के पिता की छवि निहारते हुए,
बच्चों की बातें सुनकर
मुझे क्यों रोना आया?
अभी तक,
आया नहीं शव
पूरा गाँव जमा है, उसके घर के पास,
एक का दुःख यहाँ है सबका
दुःख को बाँटने वाली बात
अभी भी है गाँव में।

यहाँ शव को देखकर
कोई डरने वाला नहीं
बच्चों से बूढ़ों तक
शव को देखने और छूने के प्रयत्न में,
नहीं रखते भेद वे शव और ईश्वर में
यह नहीं है प्रथम,

न ही यह अंतिम
अगर हालत रही ऐसी,
तो कई मौतें
शव के इंतज़ार में
बढ़ती नज़रों की संख्या भी
गाँव का सामूहिक शोक
प्रतिध्वनि होता
अर्थात्
ज्वालाएँ कोयलों की निशब्द
होती रहेगी यूँ ही प्रवाहित।

–वी.आर. शर्मा

समंदर

जल नहीं, तेलंगाना में
खेत भी नहीं
समुद्र नहीं, रोना क्यूँ इस बात का?
एनकाउंटर हुआ बेटा, बेटा के शव के सामने
रो-रोकर माताएँ बनी समुद्र
अब आएगा, तब आएगा, धारण कर गर्भ को,
शिशु को दे जन्म
पत्नियाँ है- दुःख का सागर
पिताजी गए हैं जंगल है
कर रहे बच्चे उनका इंतज़ार
सनी है भूमि रक्त से,
इसे देख दुःख से रो रही प्रजा
तेलंगाना,
जीवन-वीणा है- कच्चे धागों की,
निरंतर बहती अश्रुधारा
सुना, अनसुना करने वाली हृदय-वीणा

जल नहीं, तेलंगाना में
खेत भी नहीं
समुद्र नहीं, रोना क्यूँ इस बात का?
अपार दुःख, समुद्र–समान,
यहाँ जुल्म है– सबेरे और शाम
भय है– अंधकार समान।

–अनवर

तेलंगाना नाद एक जीवनाद है

चलते-चलते
तेलंगाना की बात उठानी चाहिए
खेलते-गाते
तेलंगाना-गीत गाने चाहिए
पढ़ाते-पढ़ाते
तेलंगाना का विषय आना चाहिए
तेलंगाना-माँ को
तेलुगु माता का दोष कहना चाहिए
गणित सिखाते-सिखाते
तेलंगाना का पर कैसे टूटे ये दुःख जताना चाहिए
यात्रा करते-करते
सूखे खेत बताने चाहिए
परिपूर्ण प्रोजेक्ट बताने चाहिए
भूखे-प्यासे, बिना प्रोजेक्ट के
किसी भी भूमि हरी-भरी
किसी की बंजर, रहस्य खोलना चाहिए
सिनेमा, सीरियल देखते-देखते

लगातार आने वाली हँसी अचानक रोकनी चाहिए
विलन हास्य-कलाकार तक सीमित
हमारी शैली पर, हमारी भाषा पर
जितना दुःख एसिड से होता है, बताना चाहिए
मातृ-दुग्ध जैसी स्वच्छ भाषा
बाज़ार में बोली जाने वाली आत्मीय भाषा को,
कृष्णा गोदावरी की तरंगों-सी भाषा को
चिढ़ााते, भुलाते, डुबाते
निरंतर हो रहे षड्यंत्र का ज्ञान कराएँ

लोरी-गीत, लोक-गीत
जीवन-गीत, बतकम्मा गीत
तेलंगाना की गौरव-गाथा का डंका बजाए
लोरी, लोरी, लोरी, लोरी
तेलंगाना के गाँव की लोरी
तेलंगाना की मातृ लोरी
पढ़ते-पढ़ते तू
तेलंगाना गीत बन जा
बढ़ते-बढ़ते तू
तेलंगाना की बेड़ियाँ तोड़
लाली-लाली-लाली-लाली-लाली
जागरूक हो, तेलंगाना के लिए लड़
नींद में भी देख स्वप्न तेलंगाना के,
तेरा ध्यान, तेरा मौन
मात्र तेलंगाना ही होना चाहिए
अब,
हर कविता के आगे-पीछे

तेलंगाना शब्द जोड़ना चाहिए
प्रत्येक डफली रूपी हृदय पर
तेलंगाना शब्द बजाना चाहिए
पैरों में तेलंगाना के घुँघरू बाँधने चाहिए
अब,
प्रत्येक जिह्वा
तेलंगाना का मंत्र पढ़े
गतिवान व्यक्ति
कर–पत्र के समान तेलंगाना के प्रचार करे
जन–समूह में
तेलंगाना का झंडा लहराना चाहिए
स्वतंत्रता के लिए 'वंदे मातरम्' है प्रेरणा,
तो,
आज गीत तेलंगाना के भी गाने चाहिए।
पर्वत, गुफाएँ, गाँव, पगडंडियाँ, आकाश, पृथ्वी पर
तेलंगाना की प्रतिध्वनि गूँजनी चाहिए
तेलंगाना हमारी माता, हमारी बहन
वही हमारी दिशा–निर्देशिका, जीवन–धारा
वही बंजर भूमि में फसल उगाने वाली
निस्तेज को जोश देने वाला नया प्रकाश
तेलंगाना एक राजकीय विन्यास नहीं है
ज़रूरत है एक इतिहास की,
उन्नति का नाम दिखावा नहीं
वह है आत्म–गौरव का विज्ञापन
तेलंगाना नहीं है भीख,
वह अधिकार है जन्मसिद्ध
तेलंगाना मात्र नारा नहीं
वह है जीवन–स्वर।

– उदय मित्र

देखते हो क्या? देखिए...

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर बस चढ़कर आइए
चारमीनार
बचपन में खींचा गया रथ का चित्र
मुझे पालने वाली बहन के बालों का जूड़ा
मेरी पढ़ी हुई पहली कविता-
देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर बस चढ़कर आइए
लाड़ बाज़ार
हमेशा शादी-मंडप सा
सोलह शृंगार किए हुए
मेरी जगह- वह दीप-सी खिड़की

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर.....
पत्थरगट्टी-
बड़े हीरों से बनाया गया बंगला

मोतियों–सा उद्यान–वन
मेरे मुस्लिम भाई के रमज़ान की खुशी

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
गुलज़ार हाउस
होली के मानो विविध रंग
खुशबू (इत्र) में डूबा प्रेम मुकुट
मुझे आलिंगन में बाँधने वाला यौवन

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
कृष्णा टॉकीज़
रंगीन ब्लाउज़ पहने हुई मधुबाला
नशीली आँखों वाली शशिकला
पल्लू लहराती रानी

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
मदीना होटल
प्राण प्रिय मित्र
मलाई से बनाई हुई डिश
जवानी की याद दिलाता आईना

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर...
सालारजंग म्यूज़ियम

हैदराबाद में समाया जगत्
चाँदनी के टुकड़ों में समेटता
प्रेमिका के लिए मानो भूल-भुलैया घर,

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
सिटी पुस्तकालय
बड़ी एड़ियों वाली सैंडल पहने युवती
एकांत में अपने मेहंदी वाले हाथों से हस्ताक्षर करती
प्रेम-पत्र का वह रहस्य मंदिर

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
गुजराती गली
राजकपूर की अभिनेत्री, घूमने वाली जगह
संगीत और आनंद में बीते वह मधुर क्षणों की यादें
प्रेम में सब कुछ न्यौछाहर करने का वसंत

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
सुल्तान बाज़ार
सच होते सपने
आशाएँ मध्यवर्गीय की
मराठी युवतियों की उड़ती हुई जुल्फों का दृश्य

देखते हो क्या? देखिए
पब्लिक गार्डन

फोटोफ्रेम जैसी शाम
हाथों में हाथ डाले हुए जोड़े

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
नौबत पहाड़
किसी को आवाज़ देती सुंदर युवती
अब मुरझाये फूल
फूलों की समाधि बने प्लांटोरियम

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर...
शाहअली बंडा
मेरे सपनों की प्रथम सीढ़ी
माँ को प्रणाम करते पदचिह्न
हाथ मिलाते शेष गीत

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
लाल दरवाज़ा
देखी मैंने कई बारातें,
कई शव यात्रा भी

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
मेरे हृदय का अनुभव
कई रिश्तेदार

मेरे शरीर का एक रूप

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
नागोल
निराश और दुःख में डूबा
त्यौहार के फूलों का बगीचा
अब तक आ रही माँ की पुकार

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
सुधा सिनेमा हॉल
तोते से होंठ, कमर लचीली
'इत्तेफाक' राजेश खन्ना की हँसी
मेरे ग्लैमर को बढ़ावा मिलता मंच

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
अप्सरा गली
सेकन्ड शो के पोस्टर्स
कोथमीर खरीदने जाता हुआ मैं
गया रूक पोस्टर के सामने

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
बोनालु का त्यौहार
गर हुई वर्षा तो बगारा चावल

न हुई तो वैभव यात्रा का
मित्रों के मिलने के मधुर क्षण

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
उप्पुगुड़ा स्टेशन
इंतजार करते रिश्तेदार
जानकर वह साधु
मेरा टिकट खो जाने वाला अंधेरा प्लेटफॉर्म

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
एबीड्स
प्रेम का राज्य
अप्सराओं का महल
यहीं मैं बना राजुमार

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
उस्मानिया हॉस्पिटल
नदी के समीप, मानो जलती हुई मोमबत्ती
अब, बिना पत्तों का वृक्ष

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
लाल-रंग के होंठ
पत्थर-सा दिल

प्रातःकाल
नगर में प्रवेश करता संन्यासी
देखते हो क्या? देखिए

डबल डेकर....
सिटी कॉलेज
सजा हुआ मानो शादी का घोड़ा
कॉरिडोर में पायल की झंकार
कई लोगों को महान् बनाने वाला आश्रम

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
गोलकोण्डा
बिना मूल्य का आभूषण
बिना पत्थर का, बिना रंग का
गिर पड़ी राजा की अँगूठी
फीकी पड़ी राजमुद्रा

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....
महबूब की मेहंदी
चाँद धरती पर उतर आया हो
अब कुम्हलाया हुआ गुलाब फूल
मेरी नज़र में बची तितली

देखते हो क्या? देखिए
डबल डेकर....

जो आप जानते हो, वह हैदराबाद है अलग
मेरी सुनाई ग़ज़ल है अलग
यह एक मोर-पंख
मुझे प्यार करती प्रेमिका
आओग क्या बार-बार आएँ
मिलेंगे शालीबंडा के पास
दीपावली के दिन लड्डू पूरी
रमज़ान ईद पर शिर-कोरमा
सासर भर गरम चाय
सोंफ, खोपना, मीठा पान।

– आशा राजु

भावुकता

माँ
माँ समान धरती
धरती से जुड़ा जीवन
रिश्ते–नाते
हमको सभी सेंटीमेंट
हाँ! भाव ही हमारे
जीवन का मूल।

अनुकूल–प्रतिकूल
परिस्थितियों में भी
हमारा मिट्टी से संबंध
इस मिट्टी की सुगंध से ही
जीवन की लेते हैं साँस
मिट्टी ही हमारे प्राणों का आधार
शरीर में रक्त प्रवाह
तक मात्र सहारा

तुम पैसों के लिए पैसों से ही
रियल एस्टेट के रूप में क़ब्जे की जगह
हम पेट की भूख के लिए
मेहनत मजूरी कर
कर रहे हैं बड़े-बड़े भवनों का निर्माण

यहाँ फुटपाथ पर
मकई से भरा टोकरा
अमरूद बेचने वाली माँ
सीताफल भरा टोकरा
आपके लिए
फलों के साथ अन्य स्वाद भी दे रहे हैं
स्थिति फूलों को बेचने की जगह
अब लकड़ी बेचने की भी न रही
तब,
आग लग रही है पेट में,
चोरी छिपे
मोड़ रहे हैं, जल का प्रवाह
अपना ख़ून कर,
बचा लिया है, कुछ शेष।

फूले-फले खेतों का
कर रहे हो हनन
राजकीय झाड़ी डालने वाले तुम,
तुम्हें क्या पता हमारी भावुकता
हमारी फूली-फली हालत फसलों की
हो गई है, अँधेरी नगरी चौपट राजा समान।

आपको हमारी भावुकता
रह गई है मात्र कोरी बातें बनकर
एक और धोखा देने की ऊँचाई
कल की आवाज़ बदलकर
पीठ पर छुरी के वार करना
हमको हमारे सेंटीमेंट
मन की व्यथा, असहनीय तरंगे समान है।

हृदय में गूँजते हैं गीत
हलों की ध्वनि के
अपने ही किए हुए वादों पर फेरते पानी
अविश्वास की ओर जाती क्रोधाग्नि
लिए हुए अत्याचार पर हमारी लगेगी आह

हिला देंगे तुम्हारे आसन को,
करेंगे अधोगति अधिकार की,
तेलंगाना की प्रवाहमयी तरंगे
एक दिन तुम्हें
गिरा देगी ऊपर से नीचे।

– वझुला शिव कुमार

मेदक चर्च

मुफ़्त में काम
बाँटने वाला वॉकर
ईश्वर प्रदत्त भेंट
अशोक वृक्ष
ऊँचे कर हाथ
करते हैं स्वागत

पद-चिन्ह पर
खिला हुआ पत्थर-सा कमल
मन की मलिनता को धोता निर्मलहृदय
चारों ओर से
ऊपर जाती सीढ़ियाँ
पहुँचाती है- सभी को
एक ही जगह

तुम्हारे पैरों को बाँधकर
खिड़की से

गिरते इंद्रधनुष
लहराती किरणें
बड़े प्यार से
मानो रही हैं चूम
आश्चर्य से
सिर उठा दो
मानो गुफा में आ गये

फिर आनंद से सिर उठा झूम
पूर्व की ओर पशु-शाला है
यही हुआ जन्म बाल-यीशु का
हमारी आँखों के सामने
झर-झर झरता पानी
असंख्य तारे
अंजलि दे रही हैं

पश्चिम की ओर
थम से गए पाँव
धोकर पाप के भार को
क्रॉस पर यीशु
दोनों आँखें मानो वरुणा का दरिया
देह की दिव्य-ज्योति
होती है प्रज्जवलित

देह रूपी अंजलि करेंगे अर्पित
उत्तर की ओर लगा दृष्टि
प्रभु-यीशु के नव-लोक में

प्रयाण कर
करेंगे हृदय रूपी अंजलि अर्पित

हेमंत ऋतु में
घास पर ओस की बूँदें
वसंत ऋतु में पत्तों पर सोने का बिठौना
वसंत रूपी नव-अंकुर
मानो नए प्रवासी।

– सुंकर रमेश

भेताल

मृत्यु अर्थात् भय, दुःख, मुझे और तुम्हें
फिर भी,
वह गाता है- मृत्यु-गीत
गाँव के मेरे जीवों को
दुःख से अभिषेक करते जादूगर
एक-एक कर धँस रहे हैं ज़मीन में

सफ़ेद रूमाल सिर का मुकुट बना
काले-काले कंधों पर
ज़मीन की गोद में पहुँचा हुआ
माँ की साड़ी के पल्लू पर
दुःख के गीत सुनाई दे रहे हैं
इन वीरों के युद्ध हुए समाप्त समझ
रथी के सामने हो खड़े हो आख़िर शंख बजाते हैं

शव-यात्रा में रहकर आगे
बचपन में उनके द्वारा बनाए घर है दिखा रहा

कुएँ में तैरता हुआ भी याद है दिला रहा
सूखे ताला में पशुओं के पास
मिट्टी के खिलौनों में मानो प्राण है डाल रहा
यौवन के साहस-कार्य की कर रहे हैं प्रशंसा
खेत की पगडंडियों पर धान की गठरी की झंकार
चाँदनी रात के सुखों को
पानी के मोटर की आवाज़
मानो वह गा रहा हो
विपत्ति समय में बहते हुए पसीने से
करते हैं प्रशंसा ज़मीन की
उपजाऊ भूमि-हरी-भरी लहरें
सुगंध को मानो स्फुरित कर रही हो

शब्द में शब्द
दुःख में होते हैं दुःखी
वह गाँव के जीवन की
पुस्तक का आविष्कार कर
वह है - सत्य प्रवक्ता
सभी गाँववासियों को शमशान तक
पहुँचाने वाला है- मुख्य अतिथि।

- तैदला अंजय्या

बाढ़

देने के सिवाय
जिसे नहीं है ज्ञान लेने का

वारिस हूँ एकलव्य का
देने के लिए अभी कुछ भी नहीं
मात्र
मुट्ठी भर दुःख के सिवाय

आँखों पर प्रोजेक्ट की पट्टी बाँध
गुमराह हो रही जाति मेरी
नाम स्वर के साथ झूमने के सिवा
डसना नहीं आता है

तीसरा पाँव रखने के लिए
बिना सिर का शरीर हूँ मैं

जीवन का अर्थ
सब खो देने वाला
फूलों सा न खिल पाया
बली बन मुरझा गा

अन्य के शरीर का
सामूहिक दुःख होकर
मानो बह रहा हूँ
जहाँ खिलना था
वहाँ मुरझा गया हूँ मैं
लालन-पालन करने वाले हाथों पर
कीलों के सिवाय फूल कैसे खिलेंगे
स्वयं सृष्टि कर, दानों पर

दूसरों का नाम लिखना चाहिए
क्रॉस के भार को ढोता हुआ शापग्रस्त
घूमता हूँ गाँव-गाँव, शहर-शहर
करता हूँ प्रवास

जंगल हुए मैदान
मैदान बने शेर
शिकारी जीवन हुआ विलीन
जीवन के लिए अब ज़रूरी है शिकार
और..........और गहराई तक
मुरझाता-मुरझाता
पहाड़ पर चढ़ते-उतरते

उतर कर चढ़ते
जहाँ से शुरूआत, वही अंत

परसों शेर का डर
कल मनुष्य का डर
आज बाँध का डर

हस्ताक्षर का डर
हृदय में छिपे चार अक्षरों को
मानो जला दिया जिह्वा पर ही
अँगूठे की मोहर से डर
काट दिया अँगूठे को ही

पैकेज (Package) जब शव की पेटी बन
पुनः आवास का बन शरणार्थी
बाँध आधुनिक समाधि बनाते इस समय
मैं तीर-कमान सा बन जाऊँगा
पर झुकूँगा नहीं,
हस्ताक्षर के लिए।

– पी. विद्यासागर

एक पागल शायर

वर्षा
चट्टान को ही धो रही
तूफ़ान
शहनाई के रागों में
है घुल रहा
धूप–छाँव मिलकर
आईने पर लगा रहे हैं दाग़
हवेली में मंद गति
अत्तर समान है फैल रहे
लंबी गली
चेहरे पर आई लटें मानो
मानो बुला रही हों
होठों से
हवा भर
पान–सुगंध है फैला रही
इन्द्रधनुष
मानो ज़मीन पर उतरता हुआ

हैदराबाद को है देख रहा
तुम भी आओ मित्र
सपनों की दुनिया को दिखाऊँगा
ऐसा अद्भुत शहर,
मेरे सिवा
कोई दिखा नहीं सकता
अपनी चप्पल को रख बाजू
शुद्ध दृष्टि से
नये पुल पर खड़े होकर देखो
नेल-पॉलिश की चमक पर
उड़ता हुआ पक्षी जैसा
चारमीनार है दिख रहा
तुम्हारी आँखों में
प्रतिफलित होता हुआ
बारात की चाँदनी के प्रकाश में
लाड़ बाज़ार है हिल राह
रंग-बिरंगी चमकती मछली-सा
एकवेरियम तालाब-सा दिख रहा म्यूज़ियम
चंद्रमा को
कंधों पर थपथपी
देती-माँ जैसा
उस्मानिया दवाख़ाना
उस समय की लहराती तरंगें
देख रही हैं मूसी नदी को
होली के दिन
गुलाल से खेले हुए पद-चिनूह
हाईकोर्ट की सीढ़ियाँ चढ़

हँस रही है
पैरों को ऊपर उठा कर देखने से
धूप में गिरा हुआ आभूषण–सा
शालीबंडा है दिख रहा
ऊपर से उतरती हुई
अरबी–अप्सरा समान
फलकनुमा देख
होता है आश्चर्य
समीप घूम कर देखने से
अमर–प्रेमिका का कमरबंद समान
पुराना पुल है बचा हुआ
थोड़ा ऊँचा उठकर देखने से
हाथी की अंबाडी–सा
गोलकोंडा क़िला खड़ा है गर्व से
बिछा हुआ पर्शियन चटाई का (क़ालीन)
पत्थरगट्टी है चमक रहा
बिना मेकअप के, पुरानी फिल्म अभिनेत्री–सा
प्राचीन स्वप्न चमकता–सा
वैभव रूप है कृष्णा टॉकीज का
दूर से उड़ती पतंग जैसा
केशवगिरी फूलों से सजा है रथ
सर को ऊँचा उठाकर देखें तो
मीरालम टैंक से
चंपा की सुगंध से
चले बंजारे
रास्ते का अंत
पल्लुओं के रंग से

सना हुआ
दिख रहा है शहर
अपने चारों ओर स्वयं घूम कर देखो
फूल की डंडी से झुका हुआ
दिखाई देता है आकाश
चाँदनी के टुकड़ों समान
कबूतर खेल रहे हैं जहाँ
वहाँ दिख रहा है हैदराबाद
तुम्हें नहीं है समय
घुंघरूओं की आवाज़ सुनने की इच्छा भी
सुंदरता का आदर करने का
नहीं है संस्कार तुममें
संगमरमर का खिलौना
तेलंगाना-घर के आँगन की
मानी है रंगीली
वहीं तेलंगाना है जैसा
सौंदर्यता को प्रणाम करना
नहीं है ग़लत
अच्छेपन को देख
हो जाओ संतुष्ट
जिसकी क़ीमत कभी कम न हो
ऐसी संस्कृति को
करो साष्टांग प्रणाम
मैं एक पागल शायर हूँ
एकांत में मैं मिला तो
हैदराबाद
मुझसे मन भर करता है बात

चाँदनी सदृश्य रात में
मुझे चूमकर शश्वत रूप से
रखता है ज़िंदा
हे मित्र! हैदराबाद
मेरा एक चित्र लेख है
धोखे और परिवर्तन
होने पर भी
मेरी आँखों का नज़रिया
कभी बदलता नहीं
मन की उम्र कभी नहीं है बढ़ती।

– राजा

बांध

1.

पोलावरम–पोलावरम
तू किसकी आँखों का सपना है
किस दरिद्र के जीवन का स्वर हो?
विजयवाड़ा
काकीनाड़ा
विशाखपट्ट्टणम के बीच
त्रिभुज में देखते हुए सपनों में तुम हो
तुम हो एक कंधे ज़मीन के
जन्नोई को ज़मीन से दूर करता हुआ
ठोस कंधा हो तुम

पानी पर्वत को
कमरबंद–सा पहनकर
भागती हुई
मेरी गोदावरी
कैसे बनाओगे तुम?

इतिहास की पुस्तकों में
आकार में बड़ी हैं
पर,
होती है मोर की आँख समान
150 मीटर ऊँचाई
तुम्हारे आकार को
एक बार गोदावरी की बाढ़
का धक्का
भद्राद्रि राम के पद-चिह्नों को ही नहीं
परंतु
डुबो रही है सिर को भी, गोदावरी की पावन तरंगें
पोलावरम-पोलावरम
किसकी आँखों की हो तुम चाँदनी?
कौन-से पिछड़े लोगों के जीवन के
गिरे हुए अँधेरे-कण हो?

2.
पानी
बाँध
ये दोनों अब
अविभावित शब्द
जीवन को डूबोने वाला पानी मानो आँखों का सागर
जीवन-समुद्र रूपी बाँध
जो किनारा पार नहीं कर सकता

पानी
बाँध

ये दोनों पर्याय शब्द
दो हाइड्रोजन अणु और एक ऑक्सीजन अणु
मिलने से
बनता है पानी – विज्ञान कहता है
कितने ही ऑक्सीजन (O_2) के अणुओं को
अलग करना ही पोलावरम का विज्ञान

पानी
हवा
सभी का है स्वर
अमीर लोगों का मानो वर्तमान जीवन वेद

3.

जनता के लिए
जनता से
जनता के द्वारा
प्रजातंत्र का सही अर्थ यही है तो
अब्राहम लिंकन
'प्रजा' शब्द की फिर एक बार परिभाषा दीजिए?
नहीं है जनता.......नहीं....सिर्फ मनुष्य है
धन से तिरस्कृत
अधिकार से अपमानित
आत्म–गौरव नहीं है जिनमें
खेल में, केले समान
इनके लिए
सरकार से इन्हीं के लिए
ग्राम पंचायत?

कोई सुनेगा तो
हँसी उड़ायेगा?

पैसों के लिए वोड डालने वाले
किराए के मानव हैं ये
यश–कीर्ति के मुकुट में
ये हैं पत्थर समान

4.
राजशेखर......राजशेखर
ये कौन–सा है चमत्कार
‘‘अलग तेलंगाना चाहिए तो
50 करोड़ जनता की अनुमति चाहिए’’
(राजशेखर का कहना था)
तो फिर
पोलावरम के लिए **8** करोड़ लोगों की अनुमति नहीं चाहिए क्या?
या
तुम्हारे स्वर्ण–समान त्रिभुज में
जनता ही जनता है क्या?
बची हुई जनता
निर्जीव, मूर्ति समान?

5.
नदी का किनारा
नगर–कथाएँ
एक ज़माने की अनागरिकता की बातें
नदी का किनारा।

6.

पानी ही जनता है
बहता तो.........प्रजातंत्र
मूर्तिमान जनता
मौन रहे तो मानो श्मशान
आइए..........
इस ज़मीन पर प्रजातंत्र के बीच बोए।

– वंशीकृष्णा

कश्मीर सा तेलंगाना

किसी भी सूर्योदय पर
नहीं है विश्वास
किसी भी चंद्रोदय पर
नहीं आता विश्वास
राग, द्वेष को पत्थर रूपी हृदय पर लिखकर
धोखा देना
नहीं है बात नई
पुरानी न ही पुरानी
सवेरा ही अँधेरा
अँधेरा ही सवेरा
किसी की
ईमानदारी को पहचान
प्रजातंत्र कहीं, आता नहीं नज़र
विश्वास,
धोखा
वोट के है जिन्स में
चील में

तोते को देखने वाले मनुष्य को
देते हैं धोखा
जीने के लिए प्रवासी
अन्न को तरसें
पानी को तरसें
कारण आत्महत्याओं का यहीं

इस विषय पर कौन है सोचता?
कौन है समझता?
कोई एक देखता है सपना
कोई एक बुनता है जाल
अब एकजुट हो
सभी को जलाना (हत्या करना)
मानो बन गया है आंदोलन
उनके ऊपर
बीज डाली हुई ज़मीन है ये
पर्वत को चीरता हुआ
नया अंकुर
मदमस्त राज्य की
बेख़बर ज़मीन है ये
ख़ून की धारा के मध्य
मिट्टी को आँखों से लगाते हुए
ख़ून से सनी ज़मीन को
सिर पर उठाना
सिर पर उठाना
मानो प्रगति का नया पाठ

मिट्टी को कर प्यार
मनुष्य में प्यार का सींचन करती धरती

धान का पौधा है मन का गीत
तेलंगाना...........

जलते हुए सूरज के
हृदय का है साहस – तेलंगाना
संघर्ष की हरियाली है – तेलंगाना
हाँ – हाँ।
कश्मीर है तेलंगाना
तेलंगाना है कश्मीर।

–वी. श्रीनिवास

अस्तित्व का अंतिम संस्कार

जैसे आकाश उगाता है तारों को
ठीक वैसे
उगा रहे हैं ज़मीन पर बीज
है सफलता भूमि-पुत्र की, ज़मीर की गोद में
फिर भी
'सेज' के विद्रोह के कारण ही
नाश हो रही है हमारी ज़मीर-भूकम्प में
यह ज़मीन है हमारी, यही हमारा निवाला
माँ, नानी, दादी ही नहीं
हमारा शरीर है मानो प्रतिरूप
लाखों वर्षों से हवा में झूलते हुए
खेतों की सुंदरता
हमारे परदादा, दादा, पिता के सुकर्मों

का है प्रतिबिंब ये
जैसे कर्ण ने कवच कुंडल का
दान किया
वैसे
इस भूमि को कैसे कर सकते हैं दान?

–नालेश्वरम शंकरम

एक अपूर्ण वाक्य की बात

1.

एक अपूर्ण वाक्य की बात
मैं हूँ कर रहा
भाव का ही नहीं, भाषा का विरोध करता तू
उस
अपूर्ण वाक्य का आत्म-स्वर, क्या पता तुम्हें?
चरित्र के पन्नों पर बचे हुए
उस अपूर्ण वाक्य के बारे में फिर से
कर रहा हूँ बात-

2.

हाथ-भर की ज़मीन के लिए
मुट्‌ठी भर दाने के लिए
पेट के लिए
लंबी क़तार में चलती,
बिना मंज़िल की चींटियाँ
पैरों से कुचलने पर

काटना नहीं जानती
छोटे-छोटे साँप
'चिल्लर भगवान'
शत्रुओं को गुमराह कर
तालाब पर बाँध बनाती चींटियाँ
मिट्टी को खोदती
आँखों में मिर्च डाल,
तलवार रूपी बाँध पार कर
समय को जीतने वाली सेना

टूटे हुए बिच्छू के डंक
टूटे हुए पैर वाला
पूँछ मोड़कर
क़िले की दीवार के बीच छिपा हुआ
रक्त-पिंजर

3.

हज़ारों सिंह को निगलता अजगर
चींटियों के समूह को निर्भयता
दिखाने वाला अजगर
रंग बदलकर रक्त-पिंजर की रक्षा कर
राज्य रूपी आभूषण दे
मिट्टी खोद,
झाड़ों को गिरा
बिंब को हटा
चींटियों के समूह को अलग करने वाला
शत्रुओं के पक्ष का

साँप है वह
सितंबर **17**
मिटाने वाली उद्देश्यों का प्रतीक बिंब
अगस्त **15**
बिना आशा के ही अजगर का
जन्मदिन
चींटियों के समूह चरित्र के दो ग्रह
एक अपूर्ण वाक्य को रोकने वाले मानो दो 'कामा',

4.
अब
चारित्रिक-विद्रोह को
टूटे हुए दिलों वाली चींटियों की फौज को
सायरन बजा,
गोरे मुँह पर काला-डाम्बर डालना चाहिए
'कॉमा' (,) को मिटाकर
वाक्य को पूर्ण करना चाहिए।

-डॉ. कासुला लिंगारेड्डी

जीवन रेखा

एक स्थान पर जाकर
रेख को रुकना पड़ेगा
यह है अनिवार्य
यादों के तार टूटते ही हैं
पानी के झरनों पर
कितनी सुंदरता से बनाए गए आकार
थोड़े सहज रूप से
थोड़े कृत्रिम रूप से
बहुत देर तक टिकते नहीं
बचपन में हृदय पर मारने वाला नादान बालक
बड़ा होकर जीवन को ठुकरा रहा है
सहन करना पड़ेगा
पुरातन समय के एक और ज़मींदार का
कहना है– ''हैदराबाद मेरा है''
गोदावरी नदी के किनारे
एक सामान्य व्यक्ति
''हरी–भरी मेरी ज़मीन'' कहकर

ज़मीन का, पानी का, गोदावरी माँ का
उड़ा रहा है मज़ाक़
बंधुओं! सागर को ढोता तेलंगाना
बिना पानी के तड़पता हुआ
आप सब
कितने दिन यूँ ही सिर्फ
नीति-परक बातें करोगे?
मेरी मानो
विपरीतार्थ बातें मत करो
प्रवाह के विपरीत मत बहो
किसी की जूठन नहीं चाहिए
राज्याधिकार के अग्र वर्ण की
ज़ोर की मार के बारे में सोचें
आंदोलन में मेरे और तुम्हारे हैं कितने लोग?
करेंगे हिसाब और
बाँटेंगे हिस्सा
परंतु
इसके लिए ज़रूरत नहीं है सिर काटने की
मृत्यु का डंका बजाने की ज़रूरत तो
बिलकुल भी नहीं
ज़िंदगी को रहा है मार, सहना पड़ेगा
पर सूर्य का क्या?
चटाई ले फिसलता है आसानी से
ज़रूरत, मौक़ा व मेहनत से बनाई गई नाव
जो नहीं भीगा
वह हो सकता है नाविक
बात है हैरानी व गहराई की

हाथ फैलाने पर भी मिलता नहीं परिणाम
गीत का क्या?
मन की संतुष्टि से ही हो जाता है परिपूर्ण
(गन्ने से) घास से बनाया गया तीर
समय पर नहीं आता है काम
पेड़ की छाया कभी भी होती है ग़ायब
घने, काले बादलों के बीच भी
वर्षा का रुकना है अनिवार्य
राह चलते मुसाफ़िर का क्या?
मृत्यु को बग़ल में दबाए
समय को करता है पार
थोड़ी यादें
जीवन की दो धाराएँ
एक पहले, दूसरी बाद में
दोनों को मिलाने वाली है रेखा।

–नंदिनी सिधारेड्डी

कष्ट

वानर हुए अनेक
हुए ब्राह्मण भी अनेक
पर लगता है, वश में नहीं

घोर अंधकार
मिलाया, जैसे काजल
संपूर्ण जीवन, मानो खोज बना

एक-दूसरे को स्पर्श किए बग़ैर
है निलंबित रहना तो
शरीर मानो बुख़ार में तप रहा है

जितनी गहराई में उतरे
उतनी ही ऊँचाई चढ़े जैसा
अन्न का निवाला अटका है गले में

पता नहीं क्यूं?
गाँव से शहर आए
तब से आज तक
कहीं पर मन नहीं लगता।

–मोहन ऋषि

जलेबी

धागा उड़ता रहता है
पास किनारा दिखाता है
हाथों की कारीगरी का संबंध है मन से

मानो सब कुछ पा लिया हो
मानो सब कुछ समाप्त हो गया हो
लग रहा है ऐसे

खेल रहता है चलता
मंज़िल आती है नज़र

घोड़ा दौड़ता रहता है
सच्चाई का पता है चलता
कान के निकट कर आवाज़
सामने ही बनाते हैं क़तार
चोर का पता चलता है
एक-दूसरे पर ऊँगली उठाते हैं

कोई पिता की ओर ही करता इशारा?
तो कोई दादी की ओर
पर यह सब व्यर्थ की बातें

किसी डफ़ली की आवाज़ सुन
एलव्वा माँ समान है रहे नाच
तुम्हारे मंत्र-तंत्र सब आ गए बाहर
एलव्वा माँ की हुई आँखें लाल
अब
बिस्तर बाँध लो भैया।

–लक्ष्मण

और एक बार तंगेडु फूल

‘‘**40** साल’’ कह रहा हूँ लेकिन
यह मुझमें कब नहीं हुए विकसित
इंग्लैंड में
डेफ़डील्स से बातें करते समय भी
वे मेरे साथ लहराए
दोनों ओर मशालों की तरह
तंगेडु फूल है तो सड़क सुनहरी
नहीं है तो
काली सड़क मानो अँधेरा
त्रिकोण रूपी बतकम्मा को बनाती
महान् कलाकार है मेरी माँ
भिन्न-भिन्न फूल चढ़ाने पर भी
गौरी (पार्वती) नहीं रीझती
पर यह एक फूल अर्पित करने से ही
वह मुस्कराती है
बतकम्मा से भरा गाँव का तालाब
मानो एक सजीव महाकाव्य-सा बना

पर अब कहाँ?
तैरते हुए पत्थर
बिना रोशनी की आँखें
यादें निचोड़ती हुई
बिना आँसू की आँखें समान
तालाबों को मारा गया
ऐसी जल व्यवस्था से हो निराश
बढ़ रहे हैं शहर की ओर
मेरे पीछे की तंगेडु फूल की आवाज़
वे मानो मेरे सपनों की यादें
वे मेरे बचपन के गीत
अचानक थम जाते हैं
निराशा में डूबती ज़मीन से
आर्तनाद सुनाई देता है
बंजारे बाज़ार में बैठ
लगातार दुःख बरसाते हैं
इतना सब कुछ रहते हुए भी
तंगेडु फूल के बिना मैं
विचलित....निराश.....दुःखी।

–डॉ. एन. गोपी

कुमकुम डिबिया

सबेरे
स्नान के बाद
आलमारी से कुमकुम डिबिया निकाल
माँ का श्रृंगार करना
मुझे अच्छी तरह है याद
घर के पिछवाड़े बैठकर
कुमकुम डिबिया निकालते और
ढक्कन खोलते ही आईने में
मुस्कुराता चेहरा है दिखाई देता
उस छोटी डिबिया के
दोनों पट हैं
एक में चंदन और एक में है कुमकुम
उसी में काजल, कंघी, चूड़ियाँ,
बटन, सूई, हुक्स, आदि.....आदि......।
सब उसी में है छिपे
आख़िर में ज़िंदातिलिस्मात भी है
जब भी ज़रूरत पड़ती है

तब आती है काम कुमकुम डिबिया
संदूक़ के अंदर की पेटी में
मोती का नासिका भूषण
सोने के माँ के गहने को
माँ सुरक्षित रूप से छिपाती है
लकड़ी से बनाई गई उस डिबिया को
माँ बड़े निराले से देखती है
जिसे नानी को उसकी माँ ने दिया था
मुझे नानी ने दिया था
हमें दीदी को देना है
बड़े गर्व से माँ कहती है
विरासत में आयी बिंदी का संदूक़
''कुमकुम बिंदी है हमारे माथे की शान''
माँ का पल्लू पकड़कर चलता मैं
जब भी डिबिया को छूता
माँ डराते-कहती है- ''कहीं गिर न जाए''
माँ के पास जब भी कोई आता
उसके पहनावे पर माँ का ध्यान है जाता
अपनी भारतीय संस्कृति की गरिमा को बचाते हुए
वह उस डिबिया को अपने पास है रखती
अब
बड़े-बड़े ड्रेसिंग टेबल रहने पर भी
छोटी कुमकुम डिबिया की
मधुर यादें बन जाती हैं
ब्यूटी पार्लर में जाकर
ख़रीद रहे हैं कृत्रिम श्रृंगार
बदलता समय

हमारे घर की कुमकुम डिबिया का मज़ाक़ उड़ाता है
फिर भी
लगता है ‘ओल्ड इज़ गोल्ड’
‘स्टोर रूम’ में रखी उस कुमकुम डिबिया
को अनाथ समान देखता हुआ
मेरा टूटे हुए आईने समान मन।

–के. रमेश

आपके गुज़रने से

आपकी मृत्यु के पश्चात
बच्चों की क्या दश होगी?
माँ की क्या दशा होगी?
बिना बाप के बच्चों को
धूल समान हैं देखते
बिना पति की पत्नी को
अनय के साथ हैं जोड़ते
कौवों-सा व्यवहार करते
भेड़िया समान हैं पीछा करते
आपके मृत्यु के पश्चात
घर की महिला की
रीढ़ की हड्डी मानो टूट-सी गई
घर मानो बाज़ार है बनता
जन्म देकर शिशु को
खिला-पिला कर किया बड़ा
ऊँची उड़ान की समस्या को
रिश्ते बना दिया सहारा

आप मत मरो
आपके मरने से
बच्चों के खेल मानो रूक जाते
पत्नी के पंख मानो टूट जाते
दुःख का बोझ ढोने वाली भुजाएँ
ग़रीबी की गठरी को उठाने वाले सिर
राहत से ले साँस
आराम से हैं जी रहे
आप क्यूँ मरे?
भाइयों।
बंधुजनों।
तुम मत मरो
तुम मत मरो।

–डॉ. उदारि नारायण

तेलंघाव

मैं एक टूटता हुआ,
घसीटता हुआ गीत हूँ
बार-बार जुड़ता हुआ
तेलंगाना गीत हूँ
टूट कर गिरता हुआ, जुड़ता हुआ
नर्क-सा जीवन जीने वाला
गीत हूँ मैं
37 सालों से स्वयं को काटता हुआ,
मारता हुआ, उबलता हुआ, शीत होता हुआ
लगातार घाव से रक्त है बह रहा
भाषा से......उच्चारण से........दुःखी कर,
जगह, वर्ग-भेद का भी वर्गीकरण कर
मुझे खड़ा कर दिया पीछे
प्रतिदिन ताज़े घाव पर की गयी
मार का, दर्द सहन करता
तेलंगाना गीत हूँ मैं।

–जी.आर. कुर्मे

ज़ोर-शोर से रो

आँसुओं की कहानी
हमारे पानी का दुःख
ज़ोर-शोर से रोकर किया व्यक्त हमने

पौरंग के साथ रखने से
रास्ते का ही किया नाश
पीछे से करो मत वार
कितनी बार करोगे वार?
हाथों में हथकड़ियाँ लगी क्या?
हाथ में आए शेर के बच्चों को
यूँ ही क्यूँ दिलाते हो क्रोध
जंगलों में मत फिरो
गाँव-गाँव भटकते हुए समूह पर मत गिरो
हमने आपको दिया सहारा
पर,
आपने हमें दिया धोखा
मेजॉरिटी नहीं है तो
विधानसभा में बिल बना कैसे?
विकास की बातें तो कर रहे हैं,

लेकिन,
विभाजन की बातें क्यूँ?
अपने वालों के मुँह से ही है कहलवा रहे
हमने हल चलाना सिखाया
हमने जोतना सिखाया
विद्या भी हमने ही दी
हाँ!
आपसे ही सिखा
बात पर अमल करने वाले हम,
दिखने में कठोर परंतु कोमल मन वाले
हैं हम
व्यर्थ बातें नहीं करते हम, पर
शहरी जीवन न आता बिताना
छिपा लेना, छीन लेना, हमें नहीं पता
इस बात का जीता-जागता
उदाहरण हैं हम
समझदार हैं हम, परंतु
समझदारी हमारी छिप-सी गई हैं हममें
जो होना था, हो गया
लेकिन
अपनी अच्छाई, दूसरों की शक्ति बन जाए,
ये कौन-सा है तरीक़ा?
कुता-कुता-कुता पानी उबले तक
पानी की बातें क्यूँ करें?
यहाँ के विकास को
करोड़ों ख़र्च क्यूँ?

-पोट्लापल्लि श्रीनिवास राव

गीत

नहीं रखे जाते पैर तरंगों पर
चिर यादों के दबाव में,
घूम रहे हैं अक्षर अभी तक,
नहीं हो सकता चंद्रोदय दोनों अस्तित्व के बीच
टूटे हुए बैलगाड़ी की छड़
नहीं जा सकती बहुत दूर
नदी को स्वागत करने का रास्ता
प्यास बुझा नहीं सकती
याद है, अभी भी मुझे, अषाढ़ का वन-भोजन
पत्तों को पिरोने वाले
खाने के समय
रिमझिम रिमझिम हो रही है वर्षा
सुंदर सपना नहीं दे सकता सुंदर अनुभव
पोंछ नहीं सकता किसी के आँसू
पेट का अक्षर लात मार रहा है।
आज भी
मनुष्य-मनुष्य का कर रहा है शिकार

बाज़ार का भी शिकार होता दृश्य
परंतु
दोनों शिकारियों के बीच नहीं होता
सहज जीवन
पराया जीवन,
जहाँ
हम कुछ लिख सकते नहीं
भुजाओं से सरकने वाली
हमारी नदी,
नाजुक-सी पकड़
धरातल पर यादें
लिखना ही रह गया
नहीं रखे जाते पैर तरंगों पर
बिना झुका हुआ सिर।

–नंदिनी शिधारेड्डी

पत्थर ढोते-ढोते

पत्थर ढ़ोते-ढ़ोते
भुजाएँ बन गईं पत्थर
पत्थर तोड़ते-तोड़ते
हाथ बन गये पत्थर

सिर्फ पत्थर ढोने से ही कुछ न होगा
पत्थर तोड़ने से भी कुछ न होगा
आज तो सीख लो दीवार बनाना
कल तो सीख लो दीवार गिराना

आख़िर दीवार तो दीवार है
हमारी हो या चीन की दीवार, दीवार ही है
नहीं चाहिए लड़ाई की दीवार

दीवार लाँघने वाले
दवार में सुराख़ करने वाले है दुश्मन।

–कोटम चंद्रशेखर

प्रजातंत्र का सूत्र

ज़मीन और खेत का अर्थ
लंबाई–चौड़ाई, पूर्व–पश्चिम
हो सकता है, लेकिन
राष्ट्र अर्थात् उत्तर और दक्षिण ही नहीं,
जन्म और मृत्यु भी
दुःख का सागर ही नहीं, सुख का उत्सव भी है

'आदर्श गाँव' सुनते ही
मुझे अंबेडकर से इनकार किया गया
जातिवाद याद आता है
मुझे गाँधी का नाम सुनते ही
वर्ण–धर्म का यशोगान याद आता है
एकता की भावना में धोखापन दिख रहा है
आंध्र प्रदेश नाम सुनते ही उभर आता
षड्यंत्र का एक विशाल चित्र
तो 'राम राज्य' आदर्श गाँव और तेलुगु–देश की
भाषाओं पर होने वाली चर्चाओं को

क्या बोलता है?
कंचिका चेर्ला से पदिरिकुप्मतक
कारमचेडु से चुंडरू तक हुई
रक्त क्षेत्रों के ख़ून के इतिहास के
एकता के रागों का हिसाब निकालिए
पश्चिम का एक दाढ़ी-मूँछ वाला चरित्र
व्यंग्य के स्वर में बोलता है
हम सब मिलकर रहेंगे
पूरब का एक मालिक
निर्भीकता के स्वर में बोलता है
पूरा हैदराबाद मेरा है
गोदावरी के किनारे खड़े होकर एक
सूत का धागा
मेरा जीवन हरा भरा सीमा है कहते हुए
ज़मीन पानी और माँ गोदावरी का
परिहास कहता है
देखो भाई सागर को ढोने वाला तेलंगाना
पानी के लिए तरस रहा है
ढालू ज़मीन पर खड़े होकर कब तक
नीति का उपदेश देते रहोगे
नदी में रहकर मगर से बैर की बातें
मत करो
उलटी गंगा बहाने की बात करेंगे
ऊँच नीच की भेद भावनाओं को मिटाएंगे
उच्च वर्ण की राजनीति के माथे पर
पत्थर मारने की बात करेंगे
संघर्ष में तुम्हारा और जनता का

हिसाब करके आपस में बाँटेंगे
इसके लिए नहीं है आवश्यकता सिर कटाने की
मृत्यु की डफलियां बजाने की भी ज़रूरत नहीं है
ऐसा हम मिलकर बात करेंगे
ज़िम्मेदारियों को अपना कर
भाई-भाई सा बिछुड़ जाएंगे
एकता नाम ही एक षड्यंत्र है
सिर्फ और सिर्फ
एक लोकतंत्र का सूत्र है – विभाजन।

-डॉ. जी.वी. रत्नाकर

TELANGANA KAVITHA
(Telugu to Hindi translated Collection of Poems)
Edited by: Dr. G.V. Ratnakar | Sunkara Ramesh

"**CHANDRAM**" 490, Street No. 11,
Himayatnagar, Hyderabad-500029.
email: trchyd@gmail.com